e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, मंगलवार, 17 अक्टूबर 2017, कार्तिक मास कृष्ण पक्ष त्रयोदशी, संवत् 2074 विक्रमी वर्ष-11, अंक-5, पृष्ठ-16, मूल्य- ₹ 4.00, आमंत्रण मूल्य- ₹ 3.00, नगर संस्करण

website : www.dnahindi.com

शब्द शब्द संघर्ष

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982

डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18

संस्करण : लखनऊ ■ इलाहाबाद

8 कांग्रेस को आक्सीजन देगा गुरदासपुर

9 काशी में छलकी धन्वंतरि की अमृत बूंद

16 आईएनएस किलतान नौसेना बेड़े में शामिल

धनतेरस के पीछे की कहानियां

● डॉ. भरत राज सिंह

brsinghlko@gmail.com

भगवान धन्वंतरी को देवताओं का चिकित्सक और भगवान विष्णु का अवतार भी माना जाता है। सागर मंथन के उपरांत धनतेरस के दिन भगवान धन्वंतरि मानव जाति के कल्याण के लिए आयुर्वेद के साथ उत्पन्न हुए। कहानी यह भी है कि राजा हेम के पुत्र के बारे में भविष्यवाणी की गई थी कि वह अपनी शादी के चौथे दिन मर जायेंगे और इनकी मृत्यु सांप के काटने से होगी। जब इस तरह की भविष्यवाणी के बारे में उनकी बुद्धिमान पत्नी को पता चला तो उसने अपने पति की मृत्यु न होने देने का फैसला किया और एक योजना बनाई। अपनी शादी के चौथे दिन उसने सभी प्रवेश द्वार पर धन और जवाहरात एकत्र किए और जगह के प्रत्येक नुक्कड़ और कोने को रोशन कर दिया। तब वह गीत गाती रही और अपने पति को सोने नहीं दिया। वह एक के बाद एक कहानियां सुनाती रही। मध्यरात्रि में यमराज एक सांप का रूप धरकर आए।

दीपक की उज्ज्वल रोशनी और चमक ने उनकी आंखों को अंधा कर दिया और वे उसके पति के कक्ष में प्रवेश नहीं कर सके। इस प्रकार यमराज राजा के पुत्र को काटने का मौका नहीं पा सके और वह अपने पति के जीवन को बचाने में सफल रही। तबसे धनतेरस को दिव्य देवता या भगवान के समक्ष पूरी रात में दीया जलाना एक अनुष्ठान बन गया है। इसे यम दीपदान का दिन भी कहते हैं। गौर करें तो धनतेरस और दीवाली बरसात के अंत और शरद ऋतु के आरंभ के दौरान आती है, जब घर व उसके आसपास तथा बाग-बगीचे में तरह-तरह के कीड़े-मकोड़े, सांप-बिच्छू आदि अपने लिए कोई सुरक्षित स्थान ढूंढ़ने में लग जाते हैं। रात के अंधेरे में कहीं न कहीं वे घरों में भी घुस आते हैं, जिससे खतरा रहता है। ऐसे में धनतेरस की कहानी का अर्थ भी स्पष्ट हो जाता है, वैसे भी कडुआ तेल से दीप जलने व उसकी तीखी गंध से कीड़े-मकोड़े मर जाते हैं और सांप-बिच्छू भाग जाते हैं। इसको संभवत: भगवान धन्वंतरि की कथा से जोड़ा गया है। रही बात धन-कुबेर की तो जब आप किसी पीली धातु पर रोशनी डालेंगे तो वह बहुत अधिक प्रकाशित होगी, जिसकी चमक से भी कीड़े-मकोड़े व सांप-बिच्छू आसपास नहीं आएंगे। इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि ये धातु संचित करने से जीवन में आगे के लिए भी अधिक उपयोगी होगी। प्रकाश जीवन के लिए बहुत उपयोगी है और पूजा-पाठ से मूर्तियों में ऊर्जा का संचयन होता है जो सकारात्मकता प्रदान करती है। चित्त प्रसन्न रहता है और प्रतिरोधक क्षमता का भी विकास होता है।